प्रातः क्लास 19-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। तुम जब अपने2 गांव से निकलते हो तो यह बुद्धि में रहता है कि हम जाते हैं शिव बाबा के पाठशाली में। ऐसे नहीं कि कोई साधु सन्त आदि का दर्शन करने वा शास्त्र आदि सुनने आते हो। तुम जानते हो हम जाते हैं शिव बाबा के पास। दुनिया के मनुष्य तो समझते हैं शिव ऊपर में रहते हैं। वह जब याद करते हैं तो आंखें खोलकर नहीं बैठते। वह आंखें बन्द कर ध्यान में बैठते हैं। शिवलिंग जो देखा हुआ है उसकी याद में बैठते हैं जो जो भी शिव के पुजारी हैं। अभी तो अनेकानेक को याद करते रहते हैं। भल शिव के मंदिर में जावेंगे तो भी शिव बाबा को याद करेंगे तो ऊपर में देखेंगे। वा मंदी याद आवेगा। आंखें बन्द कर बैठते हैं। समझते हैं दृष्टि कहां भी नाम रूप में जावेगा तो हमारी याद टूट जावेगी। अभी तुम बच्चे जानते हो भल हम शिव बाबा को याद करते थे, कोई कृष्ण को याद करते थे, कोई राम को याद करते थे, कोई अपने गुरु को याद करते थे। गुरु का भी छोटा लाकेट बनाकर पहनते थे। भक्ति मार्ग में तो सभी ऐसे ही हैं। घर बैठे भी याद करते हैं। फिर उनकी याद में यात्रा करने भी जाते हैं। चित्र तो घर में भी रख पूजा कर सकते हैं ना। परन्तु यह भी भक्ति के रसम रिवाज पूरे हुये। जन्म-जन्मान्तर यात्राओं पर जाते हैं, चारोधाम की यात्रा करते हैं। चार धाम क्यों कहते हैं वेस्ट ... ईस्ट चारों का चक्र लगाते हैं। भक्ति मार्ग जब शुरु होता है तो पहले एक की भक्ति जाती थी। इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति, सतोप्र0 थे। अभी तो इस समय में तमोप्रधान हैं। भक्ति भी व्यभिचारी। अनेकानेक को याद करते रहते हैं। तमोप्रधान 5 तत्वों का बनाया हुआ शरीर को भी पूजते रहते हैं। सन्यासियों का शरीर किससे बनता है, विकार से। तमोप्रधान तत्वों से बना हुआ मिलता है। तो गोया तमोप्रधान भूतों की पूजा करते हैं। परन्तु इन बातों को कोई समझते थोड़ेही हैं। भल यहां भी बैठे हैं परन्तु बुद्धि योग [illegible] भटकता रहता है। यहां तो तुम बच्चों को आंखें बन्द कर शिव बाबा को याद नहीं करना है। जानते हो बाप बहुत2 दूर देश के रहने वाले हैं। वह आकर बच्चों को श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे। देवताओं की सारी राजधानी बनेगी ना। तुम यहां बैठे अपना देवी देवताओं का राज्य स्थापन कर रहे हो। पहले तुमको पता थोड़ेही था। वह कैसे स्थापन हुआ था। अभी जानते हो। बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर बन पढ़ाते भी हैं, और फिर साथ में भी ले जावेंगे। सदगति करेंगे। गुरु लोग किसकी गति सदगति नहीं करते हैं। यहां तुमको समझाया जाता है एक ही बाप टीचर गुरु है। बाप से वरसा मिलता है। गुरु पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जावेंगे। इन सभी बातों को बूढ़ी मातायें तो समझ नहीं सकती हैं। उन्होंके लिये मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ शिव बाबा को याद करना है। हम शिव बाबा के बच्चे हैं, शिव बाबा हमको स्वर्ग का वरसा देंगे। बूढ़ी2 माताओं को फिर ऐसी2 तोतली भाषा में फिर समझाना चाहिए। यह तो हरेक आत्मा का हक है बाप से वरसा लेना। मौत सामने खड़ा है। पुरानी दुनिया सो फिर नई जरूर बननी है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई बनती है। घर को बनने में कितने थोड़े महीने लगते हैं। फिर पुराना होने में तो 100 वर्ष लग जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनिया अभी खलास होनी है। यह लड़ाई जो अब लगती है फिर वह 5000 वर्ष बाद लगेगी। यह सभी बातें बूढ़ियां तो समझ नहीं सकती हैं। यह फिर बड़ों का काम है उनको समझाना। उनके लिये तो एक अक्षर भी काफी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली हो। यहां शरीर लेकर पार्ट बजाते हो। आत्मा यहां दुःख और सुख का पार्ट बजाती है। मूल बात बाप कहते हैं शिव बाबा को याद करो, सुखधाम को याद करो। बाप को याद करने से पाप कट जावेंगे। और फिर स्वर्ग में आ जावेंगे। अभी जितना जो याद करेंगे उतना पाप कटेंगे। बूढ़ियां तो हिली हुई हैं सतसंगों आदि में जाकर क्या सुनती हैं। उन्हों को फिर घड़ी2 बाप को याद दिलाना चाहिए। स्कूल में पढ़ाई होती है। क्या नहीं सुनी जाती है। भक्ति मार्ग में तुम ने यह बहुत ही ढेर कथायें आदि सुनी हैं। परन्तु उनसे कुछ भी फायदा नहीं होता है। छी छी दुनिया से नई दुनिया में तो जा नहीं सकते। कोई भी विद्वान पंडित आचार्य यह कोई के ख्याल में नहीं आता कि सुखधाम शान्तिधाम किस वस्तु का नाम—

है। आगे तुम भी नहीं जानते थे। बड़े2 चिनमयानन्द सुखधाम दुःखधाम को थोड़ेही जानते हैं। सुखधाम को तो वह देखते भी नहीं हैं। वह तो कह देते सुख काग विष्टा समान सुख है। तो किसको वह रास्ता थोड़ेही बतावेंगे। तुम समझते हो फिर भी कुम्भकरण के नींद में सोये रहते हैं। सन्यासी क्या जाने सुखधाम शान्तिधाम से। शान्तिधाम का भी उन्हों को पता नहीं हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावें। सुख का भी उन्हों को पता नहीं हैं। बाप कहते हैं शान्तिदेवा ... परन्तु शान्ति किस चीज़ का नाम है वह जानते ही नहीं। कुछ भी नहीं जानते। न रचयिता बाप को न रचना को जानते हैं' नेती2 कह देते हैं। तुम भी आगे नहीं जानते थे। भक्ति मार्ग को तो अच्छी रीत जानते थे। घर में भी बहुतों के पास मूर्तियां होती हैं। चीज़ वही है। कोई पति लोग भी स्त्री को कहते हैं तुम घर में मूर्ति की बैठ पूजा करो। बाहर में धक्का खाने क्यों जाती हो। परन्तु उन्हों की भावना रहती है। अभी तुम समझते हो तीर्थ यात्रा करना मानाभक्ति मार्ग के धक्के खाने हैं। अनेक बार अनगिनत बार तुमने 84 का चक्र खाया है। सतयुग त्रेता में तो कोई यात्राहोती ही नहीं। वहां कोई मंदिर आदि होता ही नहीं। यह यात्राएं आदि सभी भक्ति मार्ग में ही होता है। ज्ञानमार्ग में यह कुछ भी नहीं होता। उनको कहा जाता है भक्ति, ज्ञान देने वाला तो एक बाप के सिवाय दूसरा कोई है नहीं। वही ज्ञान का सागर है। ज्ञान से ही सदगति होती है। सदगति दाता एक ही बाप है। श्री श्री शिव बाबा ही कहते हैं। उनको टाईटल की दरकार नहीं। यह तो बड़ाई करते हैं। उनको तो कहते ही हैं शिव बाबा। तुम बुलाते भी हो शिव बाबा। हम पतित बन गये हैं। हमको आकर पावन बनाओ। भक्ति मार्ग के दुवण में गले तक फंसे पड़े हैं। फंस कर फिर चिल्लाते हैं। विषय वासना के दुवण से एकदम फंस पड़ते हैं। सीढ़ी नीचे उतरते2 फिर फंस पड़ते हैं गठर में। कोई को भी पता नहीं पड़ता। तब बाबा को कहते हैं आकर हमको दुवण से निकालो। बाप को भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है' बाप कहते हैं मैं बान्धयामन हूं। इन सभी को दुवण से निकालने। इनको कहा जाता है कुम्भी पाक नर्क। रौरव नर्क भी कहते हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। उनको पता थोड़ेही पड़ता है। तुम बाप को देखो निमंत्रण कैसा देते हो। निमंत्रण तो कोई शादी सुरादी आदि पर दिया जाता है। तुम तो कहते हो हे पतित पावन आओ। इस पतित दुनिया, रावण की पराई देश में आओ। हम गले तक इसमें फंस पड़े हैं। सिवाय बाप के और तो कोई निकाल न सके। कहते भी हैं दूर देश के रहने वाला शिव बाबा। यह रावण का देश है। सभी की आत्मा तमोप्रधान हो गई है। इसलिये तुम्हों हैं कि आप पावन बनाओ। पतित-पावन ... ऐसे कह सभी चिल्लाते रहते हैं। सन्यासी लोग भी ऐसे बैठ गाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि वह पवित्र रहते हैं। यह दुनिया ही पतित है ना। रावण राज्य है। इनमें तुम फंस पड़े हो। फिर भी निमंत्रण दिया है बाबा आकर हमको कुम्भी पाक नर्क से निकालो। तो बाप आये हैं। कितना तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। तुम काम चिता पर जल मरे हो। अभी बुलाते हो बाबा आओ इस दुःखधाम के गठर से निकालो। बाप कहते हैं तुम भी तमोप्रधान थे ना। मुझे पत्थर भिलर में कहते थे। गालियां देते थे कछ मछ अवतार, वराहअवतार। कितनी गाली देते थे। याद है? यह भी खेल है। कितना अपकार करते हो। बाप फिर भी आकर उपकार करते हैं। तुम पूज्य से देवता थे। फिर पतित बनते हो तो गालियां देते हो। कण2 में परमात्मा कह देते, कितनी कड़ी गाली है। आधा कल्प गर्भ जेल में भी सजाएं भोगी हैं। दुःख भी भोगे हैं। आयु भी छोटी। अकाले मृत्यु होता आया है। ड्रामा में अपार दुःख तुम बच्चों ने देखी है। टाईम्वेस्ट होता जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। पुजारी बन कितनी गालियां दी हैं। अभी तुमको क्यों कहें। उल्लू पाजी कहें। सिकल मनुष्य जैसी थी सीरत बन्दर मिसल थी। अभी मैं आकर तुमको इन ल०ना० जैसा बनाता हूं। फिर तुम आधा कल्प राज्य करेंगे। स्मृति में लाओ। अभी टाईम बहुत ही थोड़ा है। मौत शुरू हो जावेगा तो फिर मनुष्य वैरागी हो जावेंगे। 3-4 वर्ष में क्या हो जावेगा। कई तो ठका सुनकर ही हार्ट-फेल हो जावेंगे। मौरे ऐसे जो बात मत पूछो। बुढ़ियां देखो कितनी आई हैं। बिचारी कुछ भी समझ न सकें। जैसे तीर्थों पर जाते हैं ना तो एक दो को देख बेधड़क हो जाते हैं। हम भी चलते हैं। अभी तुम समझते हो —